https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI08.021

महाकवि कालिदास के नाटकों में नारी–चिंतन

डॉ0 ऋचा मुक्ता
एसोसिएट प्राफेसर
संस्कृत विभाग
ए.पी.सेन मेमोरियल गर्ल्स पी.जी. कॉलेज
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 22.02.26
Approved: 17.07.26

डॉ0 ऋचा मुक्ता

महाकवि कालिदास के नाटकों में नारी–चिंतन

Vol. XVII, Sp. Issue Aug. 2026
Article No.21, Pg. 163-167

Similarity Check: 04%

Online available at
https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-apsmgpc-lkn-2026

DOI: *https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI08.021*

सारांश

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के श्रेष्ठ कवियों में अग्रगण्य हैं। उनके तीन प्रमुख नाटकों–'अभिज्ञानशाकुन्तलम', 'मालविकाग्निमित्रम' तथा 'विक्रमोर्वशीयम',में नारी–जीवन, उसकी संवेदनाओं, प्रेम, त्याग, धैर्य, मर्यादा, स्वाभिमान एवं विवेक का विविध रूपों में चित्रण हुआ है। प्रस्तुत शोध–पत्र में कालिदास के नाटकों में नारी–चिंतन का विश्लेषण किया गया है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम' की शकुन्तला को प्रकृति–प्रेमी, संवेदनशील, कर्तव्यनिष्ठ, पतिपरायणा, क्षमाशील तथा स्वाभिमानी नारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'मालविकाग्निमित्रम' की मालविका सौंदर्य के साथ कला–कौशल, बुद्धिमत्ता, धैर्य एवं शील का प्रतीक है, जबकि रानी धारिणी त्याग और उदारता की प्रतिमूर्ति हैं। 'विक्रमोर्वशीयम' में उर्वशी स्वतंत्र प्रेमाभिव्यक्ति, भावुकता एवं कलात्मकता का प्रतिनिधित्व करती है तथा औशीनरी आदर्श नारी का स्वरूप प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार कालिदास के नारी–पात्र सौंदर्य से आगे बढ़कर संवेदना, गरिमा, आत्मसम्मान और मानवीय मूल्यों की सश0क्त अभिव्यक्ति करते हैं।

*****This article has been peer-reviewed by the Review Committee of JGV.*

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक है। इनके जीवन वृतांत के विषय में बहुत निश्चित नहीं प्राप्त होता व कालिदास ने अपने ग्रन्थों में भी अपने विषय में कुछ नहीं लिखा। महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य में कविगुल गुरु के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। महाकवि कालिदास का भारतीय साहित्यकारों में ही नहीं बल्कि विश्व में उत्कृष्ट स्थान है, इनकी कृतियों में रस का सागर देखने को मिलता है। जिसको पढ़ने के बाद प्रत्येक पाठक रस का आनंद लेता है। इनके जीवन वृत्तांत के विषय में बहुत सी दंत कथाएं प्रचलित है, इन्हें भारत भूमि के भिन्न–भिन्न स्थानों से इनका जन्म स्थान अनुमान लगाया गया है कोई उन्हें उज्जैन का, कोई कश्मीर का कोई दक्षिणावर्त से मानता है।

महाकवि कालिदास की काव्य विद्वत्ता उनके लिखे हुए महान रचनाओं के माध्यम से देखने को मिलती है। उनकी काव्य व रचनाओं में क्षेत्र वर्णन, भाषा, भाव, रस, प्रकृति चित्रण, मानवीय भावनाओं की दृश्टि से पूर्ण संस्कृत साहित्य में उनके समान कोई भी कवि दृष्टिगोचर नहीं होता। महाकवि कालिदास ने अपनी कृतियों में महाकाव्य, नाटक तथा खंडकाव्य इन सब में अपने काव्य उत्कर्ष को स्थापित किया है। संस्कृत वाङ्गमय में सर्वश्रेष्ठ महाकवि कालिदास की सात कृतियां मानी जाती हैं । इनकी साथ कृतियों में दो महाकाव्य की रचना है–'रघुवंश व कुमारसंभवम', नाटकों की श्रेणी में उनकी तीन कृतियां प्रमुख है– भिज्ञानशाकुन्तलम, विक्रमोर्वशीयम, मालविकाग्निमित्रम् व खंडकाव्य और गीतिकाव्य में दो रचनाएं– मेघदूत व ऋतुसंहार।

महाकवि कालिदास ने हर कृतियों में नारी का चित्रण बहुत सुंदरता से किया है। परंतु उनके नाटकों में स्त्रियां सिर्फ सौंदर्यता का प्रतीक ही नहीं बल्कि मधुर, शालीन, धैर्य, विवेक, सहृदय भी है। तीन प्रमुख नाटक में तीन प्रमुख नायिकाएं–अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शकुंतला, मालविकाग्निमित्रम् में मालविका, विक्रमोर्वशीयम् में उर्वशी प्रमुख नायिकाएं प्रसिद्ध हैं। इनके नाटकों में रचनात्मकता और कल्पना शीलता की स्वाभाविक दृष्टि प्रत्यक्ष होती है। इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना अभिज्ञानशाकुन्तलम् विश्व प्रसिद्ध है। नाटकों में नारी चिंतन का बहुत सुंदर वर्णन किया है। नारी को एक सौंदर्य वस्तु के रूप में नहीं बल्कि धैर्य, प्रेम, त्याग, गरिमा, सहनशीलता व सहज भाव में दिखाया है ।

अभिज्ञान शाकुंतलम में ही शकुंतला के विषय में शकुंतला का चरित्र चित्रण देखें शकुंतला का स्वभाव बहुत ही सरल व मधुरता से दर्शाया है। शकुंतला पालित कन्या है जो कण्व ऋषि द्वारा तपोवन में पाली गई है। तपोवन में पलने के कारण शकुंतला के अंदर प्रकृति प्रेम को भी महाकवि कालिदास ने ममता रूप से दिखाया है जैसे वह पौधों और वृक्षों को पानी दिए बिना जल भी ग्रहण नहीं करती है जैसे नारी का स्वभाव ममता व सहनशील होता है वैसे ही शकुंतला का स्वभाव है। महाकवि कालिदास ने प्रकृति प्रेम में वर्णन किया है। शकुन्तला एक निसर्ग कन्या है जो प्रकृति के साथ सहज एवं स्नेह के साथ उसका पोषण करती है। प्रथम तीन अंको में शकुंतला को प्रकृति से प्रेम करने व निसर्ग कन्या के रूप में महाकवि कालिदास ने दर्शाया है। शकुन्तला में मर्यादा व लज्जा को भी दर्शाया है। चतुर्थ अंक में शकुंतला पति के घर विदा करते हुए कण्व ऋषि हृदय से कहते हैं

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वसिक्तेषु या।
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम।।
आदौ वः कुसुम प्रवृत्तिसमये यस्या भवत्युतसवः।
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायाताम्।।(अभिज्ञानशाकुन्तलम–4/11)

शकुंतला को एक संवेदनशील स्त्री के रूप महाकवि कालिदास ने चित्रित किया है। शकुंतला को एक संवेदनशील व स्नेहयुक्त स्त्री के रूप में रूप में भी दर्शाया है। चतुर्थ अंक में जब वह आश्रम से विदा लेती है तो विदाई के क्षणों में वहाँ उसे तपोवन में पालित वनस्पतियों व पशुओं को देखकर भावुक होती है और वह अपने पिता से तपोवन में मृगा की सुख से प्रसव हो जाने की समाचार देने के लिए भी अपने पिता से कहती है और अपनी सखियों के प्रति भी संवेदना प्रस्तुत करते हुए कहती है "आज के बाद मैं इसका विशेष आदर करूंगी क्योंकि प्रिय सखियों के हाथ से आज के बाद सुसज्जित होना दुर्लभ हो जाएगा।"

https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI08.021

उचितमप्येतत् अद्य बहु मन्तव्यम, यतो दुर्लभं तावत् पुनमें प्रिय सखीमण्डनं भविष्यति। (अभिज्ञानशाकुन्तलम्–4)

महाकवि कालिदास ने शकुंतला को एक आदर्श पुत्री के रूप में भी दर्शाया है। आश्रम में पिता की अनुपस्थिति में अतिथि सत्कार करने का उत्तरदायित्व शकुंतला पर ही था। शकुंतला के व्यक्तित्व में भी मर्यादा और लज्जा का संयोग देखने को मिलता है। महाकवि कालिदास ने दिखाया है कि कोई भी नारी अपने निर्णय लेने में स्वतंत्र है परंतु कुल की प्रतिष्ठा के प्रति भी सचेत है। दुष्यंत के प्रति आकर्षित होने के पश्चात भी वह अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करती।

महाकवि कालिदास ने शकुंतला को आदर्श पुत्री के साथ–साथ एक अपार प्रेम करने वाली स्त्री के रूप में भी वर्णन किया है। राजा से गंधर्व विवाह के पश्चात राजा दुष्यंत अपने राज्य को लौट जाते हैं तब वह सदैव अपने पति के लिए चिंतित रहती हुई हमेशा पति की स्मृतियों में इस तरह लीन रहती थी की ऋषि दुर्वासा के श्राप का भी वह कारण बनती है जिस श्राप के कारण राजा दुष्यंत उसे पहचान नहीं पाते हैं।

महाकवि कालिदास ने पंचम अंक में शकुंतला को विनम्र के साथ–साथ स्वाभिमानी और सत्य के पक्ष में बोलने वाला भी दिखाया है। पंचम अंक में दुष्यंत शकुंतला को पहचानने से इनकार कर देता है तो वह इस तिरस्कार से विचलित हो क्रोध से युक्त हो जाती है वह राजा को अनार्य कह कर पुकारती है, यहां महाकवि कालिदास ने शकुंतला का यह चरित्र एक सशक्त नारी के रूप में दिखलाया है, जिसमें वह अपने चरित्र पर उंगली उठने पर अपनी आवाज उठाती है, राजा के विरोध में अपने पक्ष को रखती है। पंचम अंक में शकुंतला क्रोध के साथ राजा से कहती है –

अनार्य! आत्मनो ह्रदयानुमानेन किल सर्वं प्रेक्षसे।
को नाम अन्यो धर्मकञ्चुकव्यपदेशिनस्तृणच्छन्नकूपोपमस्य तव अनुकारी भविष्यति।
(अभिज्ञानशाकुन्तलम् 5/24)

तिरस्कार और अपमान के बाद शकुंतला किसी के प्रति दीनता ना प्रकट करते हुए पृथ्वी माता से प्रार्थना करती है और कहती है पृथ्वी देवी अर्थात वसुंधरा देवी मुझे स्थान दीजिए–

भगवती वसुन्धरे! देहि मे अन्तरम्। (अभिज्ञानशाकुन्तलम् –5)

इतना ही नहीं महाकवि कालिदास ने शकुंतला को एक आदर्श स्त्री के रूप में ऐसा दिखाया है जो ममता से परिपूर्ण है। शकुंतला एक कर्तव्यनिष्ठ, क्षमाशील, विवेक युक्त और विशाल ह्रदय नायिका है। जब राजा दुष्यंत को अंगूठी मिल जाने के पश्चात उन्हें सब कुछ याद आ जाता है उन्हें क्षमा करती है। एक नारी के हर परिप्रेक्ष्य में दर्शाया एक आदर्श पुत्री के रूप में, एक आदर्श प्रेमिका के रूप में, पत्नी के रूप में, व आदर्श मां के रूप में और अपने स्वाभिमान के साथ एक आदर्श और वह सषक्त नारी के रूप में भी। महाकवि कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में नारी चिंतन का सुंदर वर्णन किया है ।

शकुंतला के अतिरिक्त शकुंतला की प्रिय सखियाँ का सुंदर वर्णन किया है अनसूया व प्रियंवदा जो शकुंतला की दो सखियां एक महत्वपूर्ण भूमिका है। महाकवि कालिदास ने सखियों के मध्य होने वाले स्नेह व प्रेम को दर्शाया है। शकुंतला, प्रियंवदा, अनसूया के मध्य किसी भी प्रकार की ईर्ष्या भावना नहीं थी बल्कि प्रियंवदा व अनसूया दोनों सखी शकुंतला की हित चिंतन करने वाली थी। अनसूया धैर्यवान है, दुर्वासा ऋषि के श्राप को सुनकर अनसूया ही श्राप में मुक्ति का उपाय पूछने के लिए प्रियंवदा को महर्षि दुर्वासा के पास भेजती है। अतः यहां पर कालिदास ने नारी को विवेकवान दिखाया है।

महाकवि कालिदास का श्रृंगार रस प्रधान नाटक है मालविकाग्निमित्रम। इस नाटक की नायिका मालविका है। महाकवि कालिदास ने अपने नाटक में कला में कुशल मालविका को सिर्फ सुंदरी नहीं बल्कि मेधाविनी और तीव्र बुद्धि वाली भी दिखाया है। मालविका एक राजकुमारी होती है फिर भी संतोष जनक व धैर्यवान है। अपने बुरे समय में भी

वह बहुत धैर्य पूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रही है। महारानी धारिणी के पास दासी के रूप में अपना कार्य कर रही है। मालविका को नृत्य सीखने के लिए रानी धारिणी नाटक आचार्य गणदास के पास भेजती है। गणदास मालविका की कला से आश्चर्यचकित रह जाते हैं उसकी कला प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुए कहते हैं–

यद्यत्प्रयोगविषये भाविकमुपदिश्यते मया तस्यै
तत्तद्विशेषकरणात्प्रत्युपदिशतीव मे बाला (मालविकाग्निमित्रम्–1/5)

महाकवि कालिदास ने अपने रचनाओं में नारी का सौंदर्य रूप का बहुत सुंदर प्रकार से वर्णन किया है। राजा अग्निमित्र जब मालविका का चित्र देखे हैं तो महाकवि कालिदास ने श्लोक में मालविका के सौंदर्य का वर्णन इस प्रकार किया है–

दीर्घाक्षं शरदिन्दुकान्ति वदनं बाहू नतावंसयोरू ।
संक्षिप्तं निबिडोन्नतस्तनमुरः पार्श्वे प्रमृष्टे इव ।। (मालविकाग्निमित्रम् –2. अंक)

महाकवि कालिदास ने अपने नाटकों में नारियों को लज्जाशील वह शीलवती दिखाते हुए मालविका में भी यह गुण दिखाया है जब राजा के सामने उसको नृत्य करना होता है तो वह घबरा जाती है यहां पर यह दिखाया है कि उच्च कुल में उत्पन्न नारी किसी भी पर पुरुष के समक्ष स्वतंत्रता से नृत्य करने में सकुंचित होती है। महाकवि कालिदास ने मालविका को सुंदर, संस्कारी, बुद्धिमान, धैर्यवान और विवेकवान नारी के रूप में चित्रित किया है ।

रानी धारिणी जो इसी नाटक में राजा अग्निमित्र की पहली पत्नी है उन्हें भी बहुत प्रभावशाली और उदार हृदय वाला दिखाया है। अंत में सत्य जानने के पश्चात राजा, अग्निमित्र और मालविका का विवाह कर देते है। उनका चरित्र भी महाकवि कालिदास ने एक त्याग व मर्यादित नारी के रूप में दिखाया है।

मालविकाग्निमित्रम् में जहां नारी को बौद्धिक व कला में कुशल दिखाया है वहीं अन्य नाटक में विक्रमोर्वशीयम् में पुरुरवा और उर्वशी की प्रेम कथा का वर्णन है। यहां पर महाकवि कालिदास ने इस नाटक के नारी के अलौकिक और भावुक रूप का चित्रण किया है। महाकवि कालिदास ने इस नाटक में उर्वशी को एक ऐसी नारी के रूप में प्रस्तुत किया है जो सहज है पर अपने प्रेम को प्रस्तुत करने के लिए स्वतंत्र है क्योंकि इस नाटक में वह एक अप्सरा है इसलिए कवि कालिदास ने यहां पर उर्वषी का नारी चित्रण पारंपरिक समाज की सीमाओं से अलग दिखाया है। महकावि कालिदास अपने नाटकों में नारी के सौंदर्य को बहुत ही रमणीयता से वर्णन करते हैं। इस नाटक में राजा के द्वारा उर्वशी के रूप और गुण का सुंदर वर्णन किया है –

अविर्भूते शशिनि तमसा मुच्यमानेव रात्रि।
नैंहास्यार्चिर्हुतभुज इव च्छिन्नभूयिष्ठधूमा म
मोहेनान्तर्वरतनुरियं लक्ष्यते मुक्त कल्पा।
गङ्गारोधः पतनकलुषा गृह्णतीव प्रसादम् म (विक्रमोर्वशीयम् 1/9)

उर्वशी अपने प्रेम को व्यक्त करने में एक स्वतंत्र नारी के रूप में चित्रित की गई है वहां पुरुरवा को पाने के लिए उर्वशी आतुर है परंतु कुछ आशंकित भी है लेकिन पुरुरवा के प्रति अपने आकर्षण को व्यक्त करने के लिए एक प्रेमिका के रूप में भी है। उर्वशी भी मालविका की तरह ही कला में निपुण है। परंतु उर्वशी एक ऐसी प्रेमिका है जो पुरुरवा पर आसक्त है जो अभिनय की अवस्था में भी वह पुरुरवा के विचारों में सुध बुध खो चुकी है तभी अभिनय करते समय भी उसके मन में पुरुरवा था। अभिनय करते समय भी उसने पुरुरवा का ही नाम लिया, कला में निपुण होने के बावजूद भी वह अपनी भावनाओं के वेग को रोक नहीं पाती, यहां कालिदास ने नारी के कला एवं भावनाओं को मिश्रित कर एक सुंदर चित्रण दिया है। उर्वशी इंद्र के आदेश के अनुसार अपने पुत्र के मुख देख लेने के उपरांत पुरुरवा से विरह हो जाने के भय से अपने पुत्र को महर्षि च्यवन की आश्रम में छिपाकर रखती है, यह दर्शाता है कि वह पुत्र वियोग सह सकती है परंतु पति वियोग सहन नहीं कर सकती है।

https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI08.021

इसी नाटक में रानी औशीनरी नारी चिंतन का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करती है वह एक आदर्श स्त्री है जो पतिपरायणा है व कालिदास ने एक आदर्श नारी के रूप में इन्हें चित्रण किया है। तृतीय अंक में रानी औशीनरी के चरित्र एवं नारी के स्वभाव पर राजा पुरुरवा कहते हैं–

अवधुतप्रणिपाताः पश्चात्संतव्यमानसोऽपि ।

निभश्तैर्व्यपत्रपन्ते दयितानुनयैर्मनस्विन्यः म (विक्रमोर्वशीयम् – 3/5)

जो त्याग और उदारता की प्रतिमूर्ति है वह अपने पति के सुख में ही अपना सुख समझती है, वही अप्सरा चित्रलेखा जो इस नाटक में उर्वशी की प्रिय सखी है वह भी उर्वशी से ईर्ष्या नहीं बल्कि स्नेह रखती है और उर्वशी के दुख को अपना दुख समझ कर उसे दूर करने का प्रयास करती है। अपने नाटकों में नारी चिंतन के सुंदर उदाहरण दिए हैं हर पात्र का नारी चिंतन भिन्न है परंतु नारी संसार की हो या अप्सरा, भावनाएं, प्रेम, उदारता, संवेदनाएं नारियों में एक जैसी होती हैं ।

सन्दर्भ

1. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, इलाहबाद, १६८०।
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम– डॉ वेद प्रकाश शास्त्री, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी ,2015।
3. मालविकाग्निमित्र– मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।
4. विक्रमोर्वशीयम्–डॉ प्रभुदयालु अग्निहोत्री, रामनारायणलाल वेनीप्रसाद, इलाहाबाद।